IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 5, April 2026
Impact Factor: 8.2

चित्रकूट के सोमनाथ मंदिर की शेषशायी विष्णु प्रतिमा में सांस्कृतिक चिंतन और कलात्मक अभिव्यक्ति का पौराणिक परिदृश्य

उत्कर्ष शुक्ला
चित्रकूट, उ०प्र०, भारत
utkarshs692@gmail.com
प्रो० निरुपमा सिंह
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविध्यालय
धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश

प्राचीन समय से ही कला मानव जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा रही है, जिसके माध्यम से उसने अपने अनुभवों और विचारों को अभिव्यक्त किया। धीरे-धीरे यह कला विकसित होकर मूर्तिकला के रूप में स्थापित हुई और धार्मिक परंपराओं से जुड़ गई। भारतीय संस्कृति में मंदिर केवल पूजा के स्थान नहीं, बल्कि कला, स्थापत्य और आध्यात्मिक सोच के केंद्र रहे हैं। चित्रकूट क्षेत्र इस परंपरा का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है। इस संदर्भ में इसके पौराणिक आधार, धार्मिक महत्व और सांस्कृतिक विशेषताओं का विस्तृत वर्णन किया गया है, जिससे इस क्षेत्र की विशिष्ट भूमिका स्पष्ट रूप से सामने आती है।इस संदर्भ में वैष्णव परंपरा के साथ-साथ महत्वपूर्ण ग्रंथों, लेखों और पुस्तकों के आधार पर भी इस स्वरूप की व्याख्या प्रस्तुत की गई है, जिससे इसकी पहचान और अधिक स्पष्ट होती है। इसके अतिरिक्त, सहायक आकृतियों और नक्काशी के माध्यम से उस काल की कलात्मक शैली को समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही स्थानीय आस्था का पक्ष भी सामने आता है, जहाँ यह प्रतिमा आज भी श्रद्धा का केंद्र बनी हुई है। अध्ययन का मुख्य भाग प्रतिमा के प्रत्यक्ष अवलोकन पर आधारित है, जिसमें उसकी मुद्रा, संरचना, शैली और आभूषणों का सूक्ष्म विश्लेषण किया गया है। इन विशेषताओं के आधार पर यह समझने का प्रयास किया गया है कि यह प्रतिमा शेषशायी (अनन्तशायी) विष्णु से संबंधित है। अतः यह प्रतिमा भारतीय कला, संस्कृति

DOI: 10.48175/IJARSCT-32852

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 5, April 2026 Impact Factor: 8.2

और लोक आस्था का महत्वपूर्ण प्रतीक है, जिसके संरक्षण और समझ की आवश्यकता अत्यंत आवश्यक है।

कुंजी शब्द: चित्रकूट, सोमनाथ मंदिर, विष्णु प्रतिमा, भारतीय मूर्तिकला, भारतीय ज्ञान परम्परा

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही कला उसके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग रही है। जब मनुष्य ने प्रकृति के बीच रहना शुरू किया तब उसने अपने आसपास के प्राकृतिक सौंदर्य को महसूस किया और उसे व्यक्त करने का प्रयास किया। प्रारंभिक समय में यह अभिव्यक्ति साधारण रेखाचित्रों, चट्टानों पर बने चित्रों और पत्थरों को आकार देने के रूप में दिखाई देती है। नदियों के किनारे, गुफाएँ और पहाड़ों की चट्टानें ऐसे स्थान बने, जहाँ मनुष्य ने अपनी भावनाओं और अनुभवों को स्थायी रूप देने की कोशिश की। यही प्रक्रिया धीरे-धीरे विकसित होकर मूर्तिकला के रूप में सामने आई। सिंधु घाटी सभ्यता से लेकर मौर्य, शुंग, कुषाण और गुप्त काल तक मूर्तिकला का निरंतर विकास हुआ और मंदिरों में देव प्रतिमाओं की स्थापना की परंपरा मजबूत होती गई। इन प्रतिमाओं के माध्यम से धार्मिक भावनाओं के साथ-साथ समाज की सांस्कृतिक सोच और कलात्मक स्तर भी प्रकट होता है। भारतीय संस्कृति में मंदिर केवल पूजा के स्थान नहीं होते, बल्कि वे कला, स्थापत्य और आध्यात्मिक विचारों को व्यक्त करने के प्रमुख केंद्र भी होते हैं। मंदिरों में स्थापित मूर्तियाँ उस समय के लोगों की आस्था, ज्ञान और शिल्पकला की समझ को दर्शाती हैं। भारत के विभिन्न भागों में निर्मित मंदिरों की मूर्तियाँ और नक्काशी भारतीय कला की समृद्ध परंपरा को स्पष्ट करती हैं (भारती, 2020)। इन्हीं में चित्रकूट क्षेत्र का विशेष महत्व है, जो प्राचीन काल से ही धार्मिक और पौराणिक दृष्टि से प्रसिद्ध रहा है। चित्रकूट के चर ग्राम में स्थित सोमनाथ मंदिर नागर शैली का एक प्रमुख उदाहरण है। यद्यपि यह मंदिर आज खंडित अवस्था में है, फिर भी इसके अवशेष इसकी पूर्व भव्यता और कलात्मक उत्कृष्टता का प्रमाण देते हैं। यहाँ प्राप्त भगवान विष्णु की उत्कीर्ण प्रतिमा विशेष रूप से महत्वपूर्ण है, जिसमें पौराणिक संकेतों और उत्कृष्ट शिल्पकला का सुंदर मेल दिखाई देता है। भारतीय विचारधारा में मंदिर को 'वास्तुपुरुषमंडल' के रूप में ब्रह्मांड का

प्रतीक माना गया है (kramrisch, 1946), जिससे यह स्पष्ट होता है कि मंदिर केवल एक इमारत नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव का माध्यम भी है। चित्रकूट, जो भगवान श्रीराम की तपोस्थली और महर्षि वाल्मीकि से जुड़ा पवित्र स्थान है, मध्यकाल में कला और स्थापत्य के विकास का महत्वपूर्ण केंद्र रहा। इसी संदर्भ में सोमनाथ मंदिर की विष्णु प्रतिमा उस समय की सांस्कृतिक समझ और कलात्मक श्रेष्ठता का प्रभावशाली उदाहरण प्रस्तुत करती है।

ऐतिहासिक एवं भौगोलिक संदर्भ: भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परंपरा में चित्रकूट का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रहा है, जो प्राचीन काल से ही धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक विकास और ऐतिहासिक घटनाओं का प्रमुख केंद्र माना जाता है। यह क्षेत्र उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित होने के कारण भौगोलिक दृष्टि से भी विशेष महत्व रखता है। मंदाकिनी नदी के तट, पर्वतीय भू-आकृति और प्राकृतिक सौंदर्य से युक्त यह स्थान प्राचीन काल से ही साधना, तप और आध्यात्मिक जीवन के लिए अनुकूल माना जाता रहा है (Directorate of Census, 2011)।

प्राचीन काल में चित्रकूट का महत्व: चित्रकूट का उल्लेख भारत के प्राचीन ग्रंथों विशेषकर *रामायण* और महाकाव्यों में प्रमुखता से मिलता है, जिससे इसकी प्राचीनता और धार्मिक प्रतिष्ठा सिद्ध होती है। *रामायण* में वर्णित है कि भगवान श्रीराम ने अपने वनवास का एक महत्वपूर्ण समय यहीं व्यतीत किया था, जिसके कारण यह स्थान अत्यंत पवित्र माना जाता है। इसी भूमि पर भगवान राम और उनके भ्राता भरत का मिलन हुआ, जिसे भारतीय परंपरा में आदर्श भ्रात प्रेम का प्रतीक माना जाता है। इसी स्थान पर कामदगिरि पर्वत की परिक्रमा आज भी श्रद्धालुओं के लिए विशेष महत्व रखती है और इसे मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता है। महर्षि वाल्मीकि से जुड़ा होने के कारण यह क्षेत्र ज्ञान और साहित्य की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण रहा है। *महाभारत* और अन्य प्राचीन ग्रंथों में भी चित्रकूट को एक पवित्र तीर्थस्थल के रूप में वर्णित किया गया है। नल-दमयंती की कथा से इसका संबंध भी इसे पौराणिक महत्व प्रदान करता है। इसके पश्चात मध्यकाल में चित्रकूट क्षेत्र अनेक शक्तिशाली राजवंशों के अधीन रहा, जिनमें प्रतिहार, राष्ट्रकूट, चंदेल और बुंदेला प्रमुख हैं। इन शासकों ने न केवल राजनीतिक रूप से इस क्षेत्र को सुदृढ़ किया, बल्कि अपनी उत्कृष्ट मंदिर कला और स्थापत्य के विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। सोलहवीं शताब्दी में संत तुलसीदास ने इस क्षेत्र को अपनी साधना भूमि बनाया और यहीं रहकर रामचरितमानस की रचना

की, जिससे चित्रकूट की धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतिष्ठा और अधिक बढ़ गई (Directorate of Census, 2011)।

सोमनाथ मंदिर और क्षेत्रीय सांस्कृतिक महत्व: चित्रकूट जिले के कर्वी-मानिकपुर मार्ग पर स्थित ग्राम चर में वाल्मीकि नदी के तट पर सौरठिया पहाड़ी पर प्राचीन सोमनाथ मंदिर के अवशेष विद्यमान हैं, जो इस क्षेत्र की स्थापत्य परंपरा और सांस्कृतिक समृद्धि का महत्वपूर्ण प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण मध्यकाल में हुआ तथा बाद में इसका जीर्णोद्धार भी किया गया। मंदिर की स्थापत्य शैली में चंदेलकालीन विशेषताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं, जो उस समय की उन्नत शिल्प परंपरा को दर्शाती हैं। 'सौरठिया' नाम को 'सौराष्ट्र' से जोड़कर देखा जाता है, जिससे यह संकेत मिलता है कि इस मंदिर का निर्माण प्रसिद्ध सोमनाथ मंदिर की शैली से प्रेरित होकर किया गया था। यह क्षेत्र कभी मदनगढ़ नामक महत्वपूर्ण स्थान के निकट स्थित था, जो उस समय की राजनीतिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केंद्र रहा होगा। वर्तमान में यद्यपि मंदिर खंडित अवस्था में है, फिर भी इसके परिसर में प्राप्त प्रतिमाएँ और स्थापत्य अवशेष इसकी पूर्व समृद्धि का स्पष्ट प्रमाण देते हैं। यहाँ प्राप्त भगवान विष्णु की उत्कीर्ण प्रतिमा इस स्थल के धार्मिक, सांस्कृतिक और कलात्मक महत्व को और अधिक स्पष्ट करती है। इस प्रकार चित्रकूट का ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भ यह दर्शाता है कि यह क्षेत्र केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं रहा, बल्कि विभिन्न कालखंडों में सांस्कृतिक, स्थापत्य और ऐतिहासिक विकास का प्रमुख साक्षी भी रहा है, जहाँ प्राचीन परंपराएँ, मध्यकालीन कला और आधुनिक युग की पहचान एक साथ दिखाई देती हैं (अग्रवाल ड. र., 2022)।

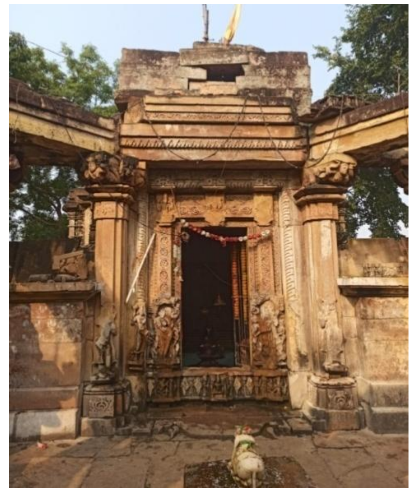

चित्र स० 1 गर्भगृह अग्र भाग, सोमनाथ मंदिर, चर ग्राम, चित्रकूट, उ०प्र०

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 5, April 2026
Impact Factor: 8.2

वैष्णव परंपरा और विष्णु के स्वरूप: भारतीय धार्मिक परंपरा में वैष्णव संप्रदाय का विशेष महत्व है, जिसमें भगवान विष्णु को सृष्टि के पालनकर्ता के रूप में पूजा जाता है। प्राचीन काल से ही इस संप्रदाय का व्यापक प्रसार हुआ और अनेक शासकों तथा जनसमुदाय ने इसे अपनाया। परिणामस्वरूप विष्णु से संबंधित प्रतिमाओं का निर्माण विभिन्न कालों में बड़े पैमाने पर हुआ। विष्णु के अनेक रूपों का वर्णन शास्त्रों में मिलता है, जिनमें उनके चौबीस प्रमुख रूप विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। स्रोतों के आधार पर प्रो० निरुपमा सिंह जी अपने लेख में बताती हैं कि विष्णु की प्रतिमा आमतौर पर दो शैलियों में दिखाई जाती है या तो वे खड़ी मुद्रा में होते हैं या क्षीर सागर में शेषनाग की शय्या पर विश्राम करते हुए, जहाँ देवी लक्ष्मी उनके चरणों को दबाती हुई प्रदर्शित की जाती हैं (Singh N. , 2015)। लेखिका के अनुसार उनके चार हाथों में धारण किए गए आयुधों का विशेष अर्थ है; जहाँ शंख विजय के पुरस्कारों का प्रतीक है, वहीं कमल की पंखुड़ियाँ सृष्टि के क्रमिक विकास को दर्शाती हैं (Singh N. , 2015), इन रूपों में भगवान का मूल स्वरूप समान रहता है, किंतु उनके हाथों में धारण किए गए आयुधों शंख, चक्र, गदा और पद्म की स्थिति के आधार पर उनकी पहचान की जाती है। उदाहरण के रूप में केशव, नारायण, माधव, गोविंद, विष्णु, मधुसूदन, वामन, श्रीधर और ऋषिकेश आदि रूपों का निर्धारण इसी आधार पर किया जाता है। यह व्यवस्था भारतीय मूर्तिकला की वैज्ञानिकता और प्रतीकात्मकता को दर्शाती है, जहाँ प्रत्येक रूप का एक विशेष अर्थ और महत्व होता है (भारती, 2020)।

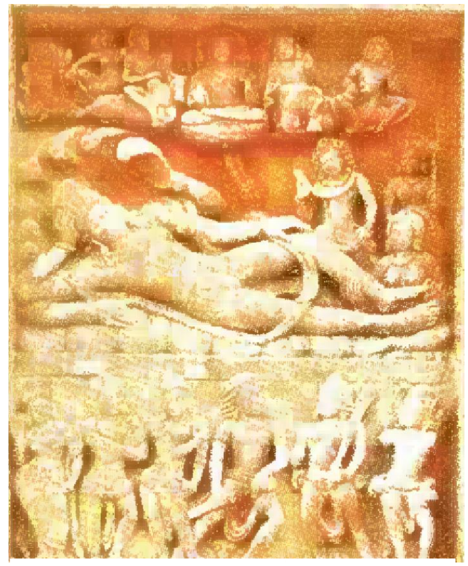

चित्र स० 2 शेषशायी विष्णु, दशावतार मंदिर, देवगढ़, ललितपुर, उ०प्र०

DOI: 10.48175/IJARSCT-32852

चित्र स० 3 शेषशायी (अनन्तशायी) विष्णु प्रतिमा, सोमनाथ मंदिर, चर ग्राम, चित्रकूट, उ०प्र०

शेषशायी / अनन्तशायी विष्णु की प्रतिमा का स्वरूप: चित्रकूट के चर ग्राम स्थित सोमनाथ मंदिर परिसर में प्राप्त यह उत्कीर्णित शिला भगवान विष्णु के शयन रूप को दर्शाती है। विभिन्न ग्रंथों और अध्ययनों में इस स्वरूप को अलग-अलग नामों से पहचाना गया है। भारतीय पुरातत्व विभाग, देवगढ़ (ललितपुर) की रिपोर्ट में इसे 'शेषशायी विष्णु' कहा गया है (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), 2021), जबकि डॉ० ब्रजभूषण श्रीवास्तव ने अपनी पुस्तक में इसी रूप को 'अनन्तशायी विष्णु' के रूप में वर्णित किया है (श्रीवास्तव, 2015)। दोनों ही नामों का आशय एक ही है, जिसमें विष्णु को शेषनाग (अनन्त) की शय्या पर विश्राम करते हुए दिखाया जाता है। उपलब्ध प्रमाणों और प्रत्यक्ष अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि चर सोमनाथ मंदिर की यह प्रतिमा इसी शयन रूप का उदाहरण है।

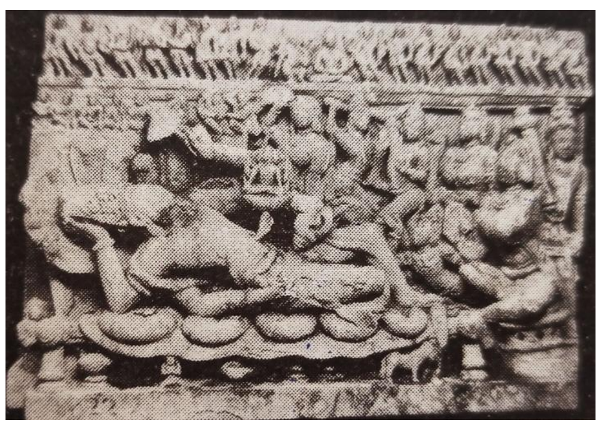

चित्र स० 4 Brahma emerging from the navel of Vishnu
प्रतिमा, बेहटा बुजुर्ग, घाटमपुर, कानपुर, उ०प्र०, 10वीं शताब्दी

यह शिला मंदिर के मुख्य गर्भगृह के सामने खंडित अवस्था में स्थित है, जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसका संबंध मूल मंदिर संरचना से रहा होगा। प्रतिमा में विष्णु को शांत और संतुलित मुद्रा में दर्शाया गया है, जहाँ एक हाथ मस्तक के पास विश्राम की स्थिति में है और अन्य हाथों में शंख, चक्र, गदा तथा पद्म के संकेत मिलते हैं।

इसके अतिरिक्त, S. P. Gupta की पुस्तक *Elements of Indian Art Including Temple Architecture, Iconography & Iconometry* में Brahma emerging from the navel of Vishnu चित्र स० 4 से संबंधित जो प्रतिमा (बेहटा बुजुर्ग, घाटमपुर, कानपुर, 10वीं शताब्दी) प्रस्तुत की गई है, उसका अध्ययन करने और इस प्रतिमा का अवलोकन करने पर यह स्पष्ट होता है कि उसका स्वरूप और विन्यास चर सोमनाथ मंदिर की चित्र स० 3 की प्रतिमा से काफी समानता रखता है (S.P. Gupta, 2020)। दोनों में विष्णु का शयन रूप, नाभि से निकलता कमल और संपूर्ण संरचना लगभग एक जैसी दिखाई देती है, जिससे यह संकेत मिलता है कि यह प्रतिमा भी उसी शिल्प परंपरा और पौराणिक विचारधारा का अनुसरण करती है। यहाँ Brahma emerging from the navel of Vishnu का अर्थ है विष्णु की नाभि से कमल का उत्पन्न होना और उस पर ब्रह्मा का प्रकट होना, जो सृष्टि की उत्पत्ति और ब्रह्मांडीय व्यवस्था का प्रतीक माना जाता है (S.P. Gupta, 2020)।

अलंकरण और सहायक आकृतियाँ: इस प्रतिमा की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसके चारों ओर अंकित सहायक आकृतियाँ हैं, जो इसे अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनाती हैं। मुख्य प्रतिमा के आसपास गंधर्वों और अप्सराओं के नृत्यरत स्वरूप उकेरे गए हैं, जो एक दिव्य और आनंदमय वातावरण का निर्माण करते हैं। भारतीय मूर्तिकला में इन आकृतियों का प्रयोग देव प्रतिमाओं के साथ स्वर्गीय परिवेश को दर्शाने के लिए किया जाता रहा है (श्रीवास्तव, 2015)। इन सहायक आकृतियों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है कि शिल्पकार ने केवल मुख्य देवता का चित्रण ही नहीं किया, बल्कि एक संपूर्ण पौराणिक दृश्य को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

शिल्प तकनीक और निर्माण शैली: इस प्रतिमा का निर्माण मुख्य रूप से बलुआ पत्थर पर किया गया है, जो उस समय की प्रमुख निर्माण सामग्री थी। शिल्पकारों ने उभारदार नक्काशी की तकनीक का उपयोग किया है, जिसमें आकृतियों को पत्थर की सतह से उभारकर बनाया जाता है।

इस तकनीक के कारण प्रतिमा में गहराई और स्पष्टता आती है, जिससे आकृतियाँ अधिक प्रभावशाली दिखाई देती हैं। प्रतिमा के आभूषण, मुकुट, कुंडल और अन्य अलंकरण अत्यंत सूक्ष्मता से बनाए गए हैं (भारती, 2020), जो उस समय के कलाकारों की कुशलता और सौंदर्यबोध को दर्शाते हैं।

प्राकृतिक प्रभाव और वर्तमान स्थिति: लंबे समय तक खुले वातावरण में रहने के कारण इस उत्कीर्णित शिला पर प्राकृतिक प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। वर्षा, धूप और वायु के निरंतर प्रभाव से पत्थर की सतह पर क्षरण हुआ है, जिससे कई भाग घिसकर खुरदरे और अस्पष्ट हो गए हैं। प्रतिमा के मुख्य भाग में विशेष रूप से भगवान विष्णु का चेहरा काफी हद तक क्षतिग्रस्त दिखाई देता है, जिससे उनके मुख के सूक्ष्म भाव स्पष्ट रूप से पहचान में नहीं आते। इसी प्रकार लक्ष्मी जी का मुख भाग भी काफी हद तक टूट चुका है या घिस गया है, जिससे उनके स्वरूप की पूर्ण पहचान करना कठिन हो गया है। प्रतिमा के ऊपरी भाग में अंकित गंधर्व और अप्सराओं की आकृतियाँ भी काफी प्रभावित हुई हैं। इनकी कई आकृतियाँ धुंधली हो चुकी हैं और कुछ स्थानों पर केवल उनकी रूपरेखा ही दिखाई देती है। सूक्ष्म नक्काशी वाले भागों में क्षरण अधिक स्पष्ट है, जिससे उनके चेहरे और शारीरिक भाव स्पष्ट नहीं रह गए हैं।

इसके अतिरिक्त शिला की सतह पर काई और शैवाल का जमाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, विशेष रूप से निचले और आर्द्र भागों में। हरे रंग की परत यह संकेत देती है कि यह शिला लंबे समय से नमी और छाया में रही है। धूल, मिट्टी और कार्बनिक पदार्थों के जमाव के कारण प्रतिमा के कई हिस्सों की मूल नक्काशी ढक गई है। हालाँकि, इन सभी क्षतियों के बावजूद प्रतिमा की मूल संरचना अभी भी पहचानी जा सकती है। शेषनाग का स्वरूप, विष्णु की शयन मुद्रा तथा कुछ प्रमुख आकृतियाँ अब भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। यह स्थिति यह दर्शाती है कि समय और प्राकृतिक प्रभावों के बावजूद इस प्रतिमा की कलात्मकता, धार्मिक महत्व और ऐतिहासिक मूल्य आज भी सुरक्षित रूप में विद्यमान हैं।

सांस्कृतिक महत्व और लोक आस्था: यह प्रतिमा वर्तमान में खंडित अवस्था में होने के बावजूद स्थानीय लोगों के लिए अत्यंत श्रद्धा का केंद्र बनी हुई है। पौराणिक ग्रंथों के आलोक में सामान्यतः खंडित प्रतिमा की पूजा करना निषिद्ध माना जाता है, किंतु यहाँ की धार्मिक आस्था इस मान्यता से

ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 5, April 2026
Impact Factor: 8.2

परे दिखाई देती है। स्थानीय श्रद्धालु इसे पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ पूजते हैं तथा इसे एक जीवंत धार्मिक प्रतीक के रूप में मानते हैं। हालांकि, यह भी देखा जाता है कि अनेक श्रद्धालु और स्थानीय लोग इस प्रतिमा के ऐतिहासिक और कलात्मक महत्व से पूर्णतः परिचित नहीं हैं। वे इसे मुख्यतः एक धार्मिक प्रतीक के रूप में ही देखते हैं, जिसके कारण वे पारंपरिक पूजा-पद्धति के अनुसार इस पर जल, दूध तथा अन्य सामग्री अर्पित करते हैं। इस प्रकार की पूजा-अर्चना, जहाँ एक ओर उनकी आस्था को प्रकट करती है, वहीं दूसरी ओर अनजाने में प्रतिमा के संरक्षण के लिए हानिकारक सिद्ध होती है। बलुआ पत्थर से निर्मित यह शिला जल, दूध और अन्य कार्बनिक पदार्थों के संपर्क में आने पर धीरे-धीरे क्षरण का शिकार हो रही है। इन पदार्थों के मिश्रण से पत्थर की सतह कमजोर होती जाती है, जिससे उसकी मूल संरचना प्रभावित होती है और नक्काशी धीरे-धीरे मिटने लगती है। इसके साथ ही काई और शैवाल का जमाव भी बढ़ता है, जो प्रतिमा को और अधिक क्षतिग्रस्त करता है। इस प्रकार यह स्थिति एक ओर आस्था की निरंतरता को दर्शाती है, तो दूसरी ओर सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण की आवश्यकता को भी स्पष्ट करती है। अतः यह आवश्यक है कि लोगों में जागरूकता बढ़ाई जाए, ताकि वे इस प्रकार की प्राचीन प्रतिमाओं के ऐतिहासिक और कलात्मक महत्व को समझ सकें और उनकी सुरक्षा के प्रति भी सचेत हो सकें। यह प्रतिमा केवल एक पूजा का माध्यम नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति, कला और परंपरा का एक महत्वपूर्ण साक्ष्य है, जिसके संरक्षण की जिम्मेदारी समाज के प्रत्येक व्यक्ति की है।

निष्कर्ष

चित्रकूट के चर ग्राम स्थित सोमनाथ मंदिर परिसर से प्राप्त शेषशायी विष्णु की यह उत्कीर्णित प्रतिमा भारतीय मूर्तिकला, पौराणिक परंपरा और सांस्कृतिक चिंतन का एक महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत शोध में विभिन्न ग्रंथों, उपलब्ध अध्ययनों और तुलनात्मक विश्लेषण के आधार पर यह स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि यह खंडित प्रतिमा शेषशायी (अनन्तशायी) विष्णु जी की ही है। इसके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यह प्रतिमा केवल धार्मिक प्रतीक भर नहीं है, बल्कि उस समय की कलात्मक दक्षता, शिल्पकला की सूक्ष्मता और गहरे दार्शनिक विचारों को भी अभिव्यक्त करती है। शेषनाग पर शयन करते हुए विष्णु का स्वरूप सृष्टि के संरक्षण, संतुलन और निरंतरता का प्रतीक है, जो भारतीय चिंतन की मूल भावना को दर्शाता है। चित्रकूट का ऐतिहासिक

DOI: 10.48175/IJARSCT-32852

और भौगोलिक महत्व इस प्रतिमा को और अधिक विशेष बनाता है। यह क्षेत्र प्राचीन काल से ही धार्मिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गतिविधियों का केंद्र रहा है, जहाँ विभिन्न कालों में कला और स्थापत्य का निरंतर विकास हुआ। सोमनाथ मंदिर के अवशेष इस बात का प्रमाण हैं कि यह स्थल कभी समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र रहा होगा। वर्तमान में यह प्रतिमा खंडित अवस्था में है और प्राकृतिक प्रभावों के कारण इसके कई भाग, जैसे विष्णु और लक्ष्मी के मुख तथा सहायक आकृतियाँ, क्षतिग्रस्त हो चुके हैं। इसके बावजूद इसकी मूल संरचना और प्रमुख विशेषताएँ अब भी स्पष्ट रूप से पहचानी जा सकती हैं, जो इसकी स्थायित्व और कलात्मक शक्ति को दर्शाती हैं। एक महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि पौराणिक मान्यताओं के अनुसार खंडित प्रतिमा की पूजा सामान्यतः निषिद्ध मानी जाती है, फिर भी यहाँ स्थानीय आस्था इस धारणा से अलग दिखाई देती है। श्रद्धालु आज भी इस प्रतिमा की पूजा करते हैं और उस पर जल, दूध आदि अर्पित करते हैं। यह आस्था जहाँ एक ओर धार्मिक निरंतरता को दर्शाती है, वहीं दूसरी ओर अनजाने में प्रतिमा के क्षरण का कारण भी बन रही है। अतः यह प्रतिमा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान आस्था और संस्कृति का जीवंत प्रतीक है। इसके संरक्षण, सही समझ और जन-जागरूकता की अत्यंत आवश्यकता है, ताकि इसकी कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत भविष्य तक सुरक्षित रह सके।

संदर्भ

- deepak pathak.) Delhi). *ancient indian sculpture and painting.* :2015 Jyotsana publication.
- Singh, N. (2015). *A Complete Analysis of the Depiction of Vishnu Incarna-tions in Sita Ram Mandir Fres-coes in Nawalgarh, Rajasthan: A Study*. research reinforcement , 75-78. from https://researchreinforcement.com/issue3/15.pdf
- Dr. Amit Rai Jain. .(2019) *Ancient Architecture of Indian Temples.* New Delhi: Kitabwale.
- Dr. C. P. Vikas Singh. .(2022) Historical and Religious Places of Rural Tourism in Chitrakoot Region . *International Journal of Creative Research Thoughts* , .9
- Dr. Sanjay Bhandari and Virendra Kumar Paul.) Aug. .(2025Temple Architecture of Himachal Pradesh: A Critical Review of Composite Construction, Regional Styles, and Research Gaps. *Indian Journal of Traditional Knowledge, vol. 24, no. 8*, .32-717
- N.P Joshi. .(2004) *Iconography of Indian Art.* New Delhi: Cosmo Publications.

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 5, April 2026

Impact Factor: 8.2

- nitin dutt. .(2022) *Stone sculptures distinct approaches in post independence India.* shodhganga: https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/से 502815/10603, को पुनर्प्राप 2022ेत
- Operations, Lucknow, Uttar Pradesh Directorate of Census. .(2011) *भारत की जनगणना* . censusindia: https://censusindia.gov.in/census.website/ से, पुनर्प्राप्त को 2011
- Ramesh Singh.) New Delhi). *Sacred Spaces: Conservation of Temples in India. 2nd ed.* :2015Heritage Publications.
- Shashi Prabha Asthana S.P. Gupta. .(2020) *Elements of Indian Art Including Temple Architecture, Iconography & Iconomentry.* New Delhi: Indraprstha Museum of Art and Archaeology.
- stella kramrisch. .(1946) *the hindu temple.* new delhi: motilal banarsidas.
- *U.P. tourism* .(न.दि) . https://sd.2tourism.gov.in/DocumentRepoFiles/InceptionReport/INRa5e9451b-aea4-3c-9484-60bb0b095256f.6pdf से पुनर्प्राप्त
- इंदुमती मिश्र .(2000) .*प्रतिमा विज्ञान.* भोपाल, म०प्र०.हिंदी ग्रन्थ अकादमी :
- उत्कर्ष और गौतम, डॉ० सचिव शुक्लाचित्रकूट के सोमनाथ मंदिर की खण्डित सूर्य प्रतिमा में .(2026) . .भारतीय संस्कृति और कला का पौराणिक विमर्श*इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च इन साइंस, कम्युनिकेशन एंड टेक्नोलॉजी)IJARSCT), वॉल्यूम 6, अंक 7*, .75-663 प्राप्ति स्थान https://doi.org/10.48175/IJARSCT-32269
- कन्छन बनवारी लाल .(2015) .*तुलसीदास की जन्मस्थली चित्रकूट.* दिल्ली मनोज पब्लिकेशन :
- *chitrakoot district administration*. (n.d.). Retrieved from https://chitrakoot.nic.in/chitrakoot_tourism-2/.
- झांसी मण्डल भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण)ASI). .(2021) *देवगढ़ .(ललितपुर)* https://asicirclejhansi.in/wpcontent/uploads/%/01/2022E%0A%4A%6E%0A%87%5E%0A%4B%5E%0A%97%4E%0A%4A%2E%0A%4BC%E%0A%4B%2E%0A%4B%2E%0A%4BF%E%0A%4A%4E%0A%4AA%E%0A%81%5E%0A%4B.0pdf से, को पुनर्प्राप्त 2026
- डॉ ब्रजभूषण श्रीवास्तव .(2015) .*प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला .* वाराणसी विश्वविद्यालय : . प्रकाशन
- डॉ राजीव, दीपक कुमार, सरोज अग्रवाल .(2022) .*विद्यार्थियों में मड़फा दुर्ग के प्रति के जागरूकता का अध्ययन.* झाँसी :E-Book संस्करण .(बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय) प्राप्ति स्थान https://archive.org/details/kaagaz-20220727-145937436450

- डॉ रामाश्रय अवस्थी .(1967) .*खजुराहो की देव प्रतिमाये .(प्रथम संस्करण)* आगरा ओरियंटल पब्लिशिंग : . हाउस
- डॉ रीता प्रताप .(2020) .*भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास.* जयपुर रा :जस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी .
- वासुदेव उपाध्याय .(1972) .*प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मंदिर.* पटना.बिहार हिंदी ग्रन्थ अकादमी :
- वासुदेव शरण अग्रवाल .(1987) .*भारतीय कला .* वाराणसी .विश्वविध्यालय प्रकाशन :
- *विष्णुधर्मोत्तरपुराण प्रथम खण्ड [संस्कृत पाठ], अध्याय* .(अज्ञात) .*43*Delhi: मोतीलाल बनारसीदास.
- शालिनी और सुनिजा कुमारी भारती . वैष्णव धर्म के मूर्तिशिल्पों का अंकन .(2020) .*सोशल रिसर्च फाउंडेशन)SRF), वॉल्यूम 5, अंक 11*, H-118H.122 प्राप्ति स्थान https://socialresearchfoundation.com/upoadreserchpapers/6/402/2103271042121st%20suniza%20kumari%2013223.pdf
- शुक्ला, उत्कर्ष और सिंह, प्रो० निरुपमा .(2025) .*चित्रकूट के भग्नावेशो का सर्वेक्षणात्मक अध्ययनचर : 9 -सोमनाथ मंदिर और मंडफा दुर्गवीं शताब्दी से .वीं शताब्दी14* धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश ०ए ०एफ ०एम : लघु शोध प्रबंध, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय.
- शुक्ला, उत्कर्ष और सिंह, प्रो० निरुपमापौराणिक ग्रंथों के आलोक में खजुराहो .(2025) ., चर सोमनाथ मंदिर .तुलनात्मक सांस्कृतिक अध्ययन में उमा महेश्वरी का (चित्रकूट)*Sattya Sandhan, ISSUE 1, VOL. 1*, .159-152 प्राप्ति स्थान https://www.cuhimachal.ac.in/admin/assets/uploads/journals/papers/paper_20250804095806.pdf
- सत्यबीर प्रजापति .(2024) .*चित्रकूट शिल्प एक विश्लेष्णात्मक अध्ययन* .shodhganga: https://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/628722/10603# से, पुनर्प्राप्त को 2024

- चित्र स० 1 गर्भगृह अग्र भाग, सोमनाथ मंदिर, चर ग्राम, चित्रकूट, उ०प्र०, स्त्रोत: स्व-संग्रह...404
- चित्र स० 2 शेषशायी विष्णु, दशावतार मंदिर, देवगढ़, ललितपुर, उ०प्र०, (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI), 2021)....405
- चित्र स० 3 शेषशायी अनन्तशायी विष्णु प्रतिमा /, सोमनाथ मंदिर, चर ग्राम, चित्रकूट, उ०प्र०, स्त्रोत: स्व-संग्रह....406
- चित्र स० 4 Brahma emerging from the navel of Vishn प्रतिमा, बेहटा बुजुर्ग, घाटमपुर, कानपुर, उ०प्र०, वीं शताब्दी10, (S.P. Gupta, 2020) 406